e-ISSN:2582-7219

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

Volume 6, Issue 9, September 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.54

6381 907 438 6381 907 438 ijmrset@gmail.com @ www.ijmrset.com

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54| A Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 6, Issue 9, September 2023 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0609026 |

पर्यावरण के समक्ष आसन्न चुनौतियाँ और संरक्षण

Dr. Koushal Kumar Sain

Associate Professor, Department of Political Science, Babu Sobha Ram Govt. Arts College, Alwar (Raj.), India

सारांश- प्रकृति मानव की आदिम सहचरी है। अनादिकाल से ही मनुष्य प्रकृति की गोद में जन्मा तथा पोषित व विकसित हुआ है। पर्यावरण व प्राकृतिक संसाधनों का निकट संबंध है, हमारी प्रकृति का अपना भव्य सौंदर्य है। पर्वतों की चोटियों का आकर्षण, नदियों का पावन नीर, हरे भरे मैदान, ऋतुओं का अपना सौन्दर्य, रंग बिरंगे पक्षियों का सुन्दर संसार व कल-कल करते झरनों का संगीत ये सब मिलकर धरती की एक स्वर्णिम छवि हमारे सामने प्रस्तुत करते रहे हैं, लेकिन मानव की अदम्य भूख व लालच ने धीरे-धीरे जंगलो व वन्य जीवों का विनाश करना प्रारम्भ कर हमारे सामने पर्यावरण संरक्षण की समस्या को खड़ा कर दिया है। आज मनुष्य चाहे कितना ही सभ्य क्यों न हो गया हो, चांद व मंगल ग्रहाँ तक पहुंच गया हो, प्रकृति के नियमों को वह नहीं बदल सकता, उनका सदुपयोग व दुरूपयोग अवश्य कर सकता है। मनुष्य ने विकास के नाम पर अपने लिए विनाश का पर्यावरण अवश्य पैदा कर लिया है, आज हमारे चारों ओर शहरी कचरे की बदबू है। अणु शक्ति के प्रयोग से रेडियोधर्मिता का खतरा पैदा हो गया है। ओजोन परत में छिद्र हो गया है, जिससे दुनिया धीरे-धीरे विनाश की ओर बढ़ रही है। आज विष्व के साथ-साथ भारत में भी अनेक संगठन पर्यावरण संरक्षण की दिशा में कार्य कर रहे हैं, पर्यावरण संरक्षण का अर्थ है- प्राकृतिक परिवेश का परिरक्षण एवं प्रकृति का पारिस्थितिक संतुलन। यह तभी संभव है जब प्राप्त संसाधनों का आवश्यकतानुसार उपयोग तो किया जाय पर उनका दुरुपयोग न किया जाय। ऐसी स्थिति में प्रायः सभी देशों की सरकारों का ध्यान पर्यावरण संतुलन को बनाये रखने की ओर गया है तथा इस दिशा की ओर कुछ कारगर प्रयास भी प्रारम्भ किये गये हैं।

शब्द संक्षेप- पर्यावरण, जैव विविधता , पर्यावरण अवक्रमण, दीर्घोपयोगी विकास।

I. प्रस्तावना

विकासशील देशों में पनपती हुई उपभोक्ता वर्ग की संख्या भी तेजी से बढ़ रही है। उपभोक्ता और उपभोक्तावाद के तेजी से बढ़ते हुए प्रभाव के कारण यह आवश्यक हो जाता है कि हम अपने प्राकृतिक संसाधनों का आगामी भविष्य के लिए संरक्षण करें। मानव जाति के हस्तक्षेप के कारण प्राकृतिक संसाधनों में गिरावट आ रही है। हमारा प्रयास एक ऐसे संपोषित विकास के लिए होना चाहिए जो कि पर्यावरण को अत्यधिक हानि पहुंचाऐ बिना अपनी अर्थव्यवस्था में जनसंख्या के आकार को सही तरह से संचालित करता है। हमारा प्रयास इस ओर भी होना चाहिए कि पृथ्वी की पर्यावरण से संबंधित क्रियाओं को सहन कर लेने की क्षमता कायम रहे तथा वह अपनी प्राकृतिक संपदा को पुन स्थापित करे यही नहीं बल्कि सैकड़ो या हजारों वर्षों तक की लंबी अवधि तक उसकी मानव जाति और अन्य प्रकार के जीव जंतुओं को सहारा देने की क्षमता भी बनी रहे। इस कार्यकाल के दौरान समाज का प्रयास होना चाहिए कि वह न केवल वर्तमान काल के लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति करें बल्कि आने वाली पीढियां के लिए भी इस प्राकृतिक संपदा को बचाकर रख सके।

पृथ्वी के सही संरक्षण एवं संचालन की हम सभी की नैतिक जिम्मेदारी है। मानव जाति के सुख एवं समृद्धि दोनों के लिए जैविक विविधता व पारिस्थितिकी तंत्र की स्थिरता मानव जाति के संरक्षण के लिए अति आवश्यक है। मानवीय गतिविधियों द्वारा भूमि, वायु और जल के स्तर में गिरावट उन प्राकृतिक संसाधनों को नुकसान पहुंचा सकती है जिसका पूरे पारिस्थितिकी तंत्र पर प्रभाव पड़ता है। यह प्राकृतिक संपदा पृथ्वी पर बसे सब प्राणियों का निवास स्थल भी है। इन प्राणियों में मानव जाति भी शामिल है। हमें ध्यान रखना चाहिए कि हम इसी पर्यावरण व्यवस्था के अंग हैं और यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम इस पृथ्वी के संरक्षण की भरपूर कोशिश करें। यदि हम इस निवास स्थलों को अन्य प्राणियों के लिए नहीं बचाएंगे को यह हमारी सबसे बड़ी भूल होगी। इस प्रकार पर्यावरण अवक्रमण का अर्थ है वातावरण के स्तर में गिरावट। अर्थात मानव की उत्पत्ति के समय जो प्राकृतिक संसाधन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थे अब उनकी प्रचुरता में कमी आ रही है।

औद्योगिक क्रान्ति शुरू होने के बाद अब तक दुनिया के तापमान में करीब 1 डिग्री की वृद्धि हो चुकी है। वैज्ञानिकों का कहना है कि 1.5 डिग्री से अधिक की बढ़ोतरी खतरनाक दुष्परिणाम लाएगी लेकिन किसी भी हाल में सदी के अन्त तक धरती का तापमान 2 डिग्री से अधिक नहीं बढ़ना चाहिए। इसे रोकने के लिए दुनिया के तमाम देशों को ग्रीन हाउस गैसों और कार्बन उत्सर्जन को तेजी से कम और फिर पूरी तरह बन्द करना होगा। उसके लिए बिजली बनाने और वाहन चलाने जैसे कार्यों के लिए साफ-सुथरे ईंधन का

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54| A Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 6, Issue 9, September 2023 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0609026 |

इस्तेमाल करना होगा। बैटरी कार, सोलरपैनल से बिजली और पवन ऊर्जा जैसे विकल्पों के साथ न्यूक्लियर और छोटे हाइड्रोप्रोजेक्ट इसका हल हो सकते हैं।

पर्यावरण संरक्षण के लिऐ किये जाने वाले प्रयासों में से एक महत्वपूर्ण प्रयास है, कानून के माध्यम से पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वालों को दण्डित करना। वस्तुतः पर्यावरण में कानून की आवश्यकता आम नागरिकों को दैनिक जीवन के लिए मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति, उनकी शुद्धता, प्रदूषण को रोकने, उनको बढ़ने न देने तथा विकृत पर्यावरण को सुधारने के लिए की गई, क्योंकि आज व्यवसायिकता के आधार पर संसाधनों का शोषण होता है। अधिकतम लाभ प्राप्ति हेतु उद्योगों की स्थापना होती है, विकास के कार्य किये जाते हैं, और उसमें पर्यावरण को प्रदूषण से बचाने के कोई प्रयास नहीं किये जाते हैं, जिससे पर्यावरण संकटमय हो जाता है। इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए विश्व के सभी देशों ने इस प्रकार के कानूनों व नियमों की आवश्यकता महसूस की जिनसे पर्यावरण सुरक्षित रह सके एवं प्रदूषण पर नियंत्रण पाया जा सके। विभिन्न राष्ट्रों ने पर्यावरण संरक्षण हेतु अनेकानेक कानून पारित किये परन्तु इस दिशा में सर्वप्रथम संयुक्त राज्य अमेरिका ने 1969 में नेशनल एन्वायरमेंट प्रोटेक्शन एक्ट पास किया तथा अन्य विशिष्ट कानूनों को पास किया जैसे- दि क्लीन एयर एक्ट 1970, वाटर एक्ट 1972, दि नॉइज कंट्रोल एक्ट 1972 आदि। इसी प्रकार इंग्लैण्ड में भी वर्ष 1974 में एक समेकित संहिता दि पॉल्यूशन कंट्रोल एक्ट नाम से पास की गई।

II. शोध विषय के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध में आसन्न चुनौतियँः और पर्यावरण संरक्षण विषय का व्यावहारिक अध्ययन किया गया है। पर्यावरण के समक्ष आसन्न चुनौतियां का सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक परिदृश्य में समीक्षा करना अनिवार्य है। यह समीक्षा भारतीय एवं अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य में पर्यावरण संरक्षण के संबंध में की जानी आवश्यक है। प्रस्तुत शोध में व्यावहारिक अनुभवात्मक विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। अध्ययन में स्पष्टता एवं प्रमाणिकता लाने के लिए सूचनाओं का संकलन द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से किया गया है। इस महत्त्वपूर्ण विषय पर विभिन्न पुस्तकों, शोध जनरल, शासकीय तथा अशासकीय प्रकाशन, समाचार पत्र पत्रिकाओं आदि का प्रयोग किया गया है, ताकि पर्याप्त आगत मिल सके।
पर्यावरण के समक्ष आसन्न चुनौतियां

पर्यावरण असंतुलन एक वैश्विक चुनौती के रूप में हमारे सामने आ रहा है। भारत सहित विश्व के अनेक देश इन चुनौतियों से दो-चार हो रहे हैं। जो पर्यावरण असंतुलन की देन है। पर्यावरण असंतुलन का प्रभाव मौसम पर सबसे ज्यादा पड़ रहा है। मौसम अपने मिजाज बदल रहा है जिससे ग्लोबल वार्मिंग बढ़ रही है। जिससे ग्लेशियरों के पिघलने से नई तरह की समस्या सामने आ रही है। बड़े-बड़े भूखंड आने वाले दिनों में जलमग्न हो सकते हैं। ग्लेशियरों के पिघलने और समुद्र तल बढ़ने से महासागरों के अथाह जल भंडार के वितरण में खिसकाव आने से धरती पर दबाव बड़ा है। इससे धरती में दरार की संभावनाएं बढ़ी हैं। प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन द्वारा विकास के नाम पर विनाश की एक नई चुनौती खड़ी हो गई है। कोयले के दहन से कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन होता है जिससे ग्रीन हाउस इफेक्ट बढ़ता है और धरती का तापमान बढ़ता है।

औद्योगिक गतिविधियों ने भी पर्यावरण में कार्बन डाइ ऑक्साइड की मात्रा को बढ़ाने में बहुत ज्यादा योगदान दिया है। पर्यावरण असंतुलन के कारण ही ओजोन परत में छिद्र होने की विकट समस्या सामने आई है। क्योंकि ओजोन परत सूर्य की पराबैंगनी किरणों से पृथ्वी पर पाये जाने वाले सभी जीव जंतुओं तथा वनस्पति की रक्षा करती है। पर्यावरण के समक्ष आसन्न चुनौतियों में यह चुनौती हमारे सामने जलवायु परिवर्तन के रूप में सामने आ रही है। आज मौसम का चक्र बदल रहा है। बिना मौसम बरसात होती है। अधिक बर्फबारी भी देखने को मिलती है। आज ठंडे स्थान और अधिक ठंडे दिखाई देते हैं जबकि गर्म स्थान और गर्म। यह सब पर्यावरण में क्षरण के कारण पैदा हुए हैं। इसी प्रकार वायु की गुणवत्ता में लगातार गिरावट न केवल हमारे स्वास्थ्य को प्रभावित करती है बल्कि यह हमारी अर्थव्यवस्था को भी भारी क्षति पहुँचाती है। विष्व भर में खराब वायु गुणवत्ता के कारण लोगों को विभिन्न बीमारियों का सामना करना पड़ता है और हर वर्ष 60 लाख से अधिक मौतें होती हैं।

वायु प्रदूषण के संपर्क में आने से कई बीमारियां पैदा होती हैं जिनमें अस्थमा, फेफड़ों की बीमारियां, हृदय रोग, कैंसर आदि। हमारे इर्द-गिर्द ऐसे कई कारक हैं, जो वायु की गुणवत्ता को बिगाड़ने का काम कर रहे हैं। वायु प्रदूषण, प्रदूषण की उस स्थिति को दर्शाता है, जहाँ वायु में उन सभी हानिकारक पदार्थों की इतनी उपस्थिति होती है जिससे मनुष्य और पर्यावरण पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है। वायु प्रदूषण को बढ़ाने के पीछे मुख्य तौर पर पराली और बायोमास के जलाए जाने, इमारतों के निर्माण और मलबे से, खराब अपशिष्ट प्रबंधन से, कच्ची सड़कें व धूल प्रबंधन से, कल-कारखानों, वाहनों से निकलने वाले धुएं से, परमाणु परीक्षणों तथा ज्वालामुखियों से निकलने वाला प्रदूषक मुख्य रूप से जिम्मेवार हैं।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54| A Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 6, Issue 9, September 2023 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0609026 |

प्रदूषित पर्यावरण में व्याप्त कार्बन मोनोऑक्साइड शरीर के परिसंचरण तंत्र, नेत्र एवं स्वसन तंत्र पर बुरा प्रभाव डाल रही है। वहीं सल्फर डाइ ऑक्साइड त्वचा में जलन पैदा कर रही है। हाइड्रोजन सल्फाइड गले में खराश का कारण बन रहा है, साथ ही हाइड्रोजन क्लोराइड अस्थियों, दांत व मसूड़े पर बहुत बुरा प्रभाव डालता है। नाइट्रोजन के ऑक्साइड स्वसन, हृदय, फेफड़े एवं आंख संबंधी बीमारियों की वजह बन रहे हैं। हाइड्रोकार्बन मनुष्य की आंख एवं नाक की म्यूकस ग्रंथियां पर बुरा प्रभाव डालने के साथ-साथ फेफड़े के कैंसर की वजह भी बन रही है।

क्लोरोफ्लोरो कार्बन-ये क्लोरीन, फ्लोरीन तथा कार्बन तत्वों के साधारण यौगिक हैं। एयरकंडीशनर, रेफ्रीजरेटर आदि से सी.एफ.सी. के उत्सर्जन एवं उनके वायु में पहुँचने के कारण ओजोन परत का क्षय प्रारम्भ हो जाता है। फलतः सूर्य की पराबैंगनी किरणें अधिक मात्रा में धरातल पर पहुँचने लगती है। जिससे तापमान में वृद्धि के कारण कई प्रकार के पर्यावरण परिवर्तन घटित होने लगते हैं तथा लोगों में चर्म कैंसर की सम्भावनाएं बढ़ जाती हैं। इस प्रकार मीथेन गैस वायुमण्डल के हरित गृह प्रभाव में 20ः वृद्धि की करती है। इनके उत्पादन के दो स्रोत हैं- धान के खेत, कोयले की खदानें तथा पशु वातावरण में मीथेन उत्सर्जन के मानवीय स्रोत हैं।

समताप- मंडल में मीथेन का सान्द्रण अधिक होने से निचले वायुमंडल व धरातल पर ताप में वृद्धि होती है। रासायनिक तत्व सीसा भी औद्योगिक गतिविधियों के फलस्वरूप उत्सर्जित होता है तथा धूल के कणों के रूप में वायुमंडल में फैल जाता है। यह सीसा वायुमंडल की ऑक्सीजन के साथ मिलकर लेड ऑक्साइड बनाता है, जो ष्वास के द्वारा शरीर में पहुँचकर तंत्रिका तंत्र पर हानिकारक प्रभाव डालता है। जिससे मस्तिष्क सम्बन्धी बीमारियाँ तथा गुर्दों व अन्य अंगों को नुकसान पहुँचता है, शरीर में पहुँचने पर सीसा खून में आसानी से अवशोषित हो जाता है। जिससे संचयी सीसा विषाक्तता हो जाती है। जिससे मस्तिष्क को हानि, पेशियों का लकवा तथा चक्कर आना आदि स्वास्थ्य की परेशानियाँ उत्पन्न हो जाती हैं।

III. शोध से प्राप्त परिणाम

इस प्रकार पर्यावरण संरक्षण के लिए निम्न कदम उठाए जाने आवश्यक है। प्रस्तुत शोध में पर्यावरण के समक्ष आसन्न चुनौतियों का समाधान करने के लिये निम्नलिखित कदम उठाए जाने की आवश्यकता है।

भारत में सार्वजनिक परिवहन की स्थिति में सुधार लाए जाने की आवश्यकता है। वर्तमान नगरीयकरण के परिप्रेक्ष्य में निजीवाहनों की संख्या में अधिकाधिक वृद्धि हो रही है एवं लोक परिवहन के साधनों की संख्या में लगातार कमी हो रही है। इससे नगरों में यातायात की समस्या विकराल रूप लेती जा रही है। ऐसे में लोक परिवहन के उपयोग को बढ़ावा देकर निजी वाहनों के उपयोग को विनियमित किया जाना चाहिए, ताकि शहर में निजी वाहनों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि पर रोक लग सके। इससे वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने में मदद मिलेगी।

आज पेट्रोल और डीजल से चलने वाले वाहनों से निकलने वाले जहरीले धुएं से हम सभी परेशान है। ऐसे में इलेक्ट्रिक वाहनों को चलाना ही सबसे बेहतर विकल्प है। भारत सरकार द्वारा वायु प्रदूषण कम करने की मंशा से ठीक एक वर्ष पहले इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देने की नीति बनाई थी। इसका सकारात्मक नतीजा भी सामने आ रहा है। पॉल्यूशन से आजादी दिलाने में इन इलेक्ट्रिक वाहनों के योगदान में बढावे की आवश्यकता है।

वायु प्रदूषण वर्तमान मे बहुत बड़ा वैष्विक संकट बनता जा रहा है इसे रोकने के लिए सभी देशों को ठोस रणनीति बनाने की आवश्यकता है। वायु प्रदूषण को रोकने कीे दिशा में शहरी निकायों द्वारा कचरा तथा अपशिष्ट पदार्थों को जलाने से रोकने के लिए प्रभावी कदम उठाए जाने चाहिए।

आज हमें जीवाश्म ईंधन के स्थान पर वैकल्पिक ईधनों को अपनाने की आवश्यकता है जैसे सौर ऊर्जा, जल ऊर्जा, पवन ऊर्जा। सघन वृक्षारोपण किया जाना चाहिए। पशुओं के अपशिष्ट को दूर गड्ढों में डालकर उन्हें ढकना चाहिएं। उद्योगों से निकलने वाले जहरीली गसों को शुद्ध करने हेतु संयंत्र लगाए जाने चाहिए।

ग्लोबल वार्मिंग की समस्या को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है कि स्वच्छ ऊर्जा को प्रोत्साहित किया जाए। स्वच्छ ऊर्जा का तात्पर्य ऐसी ऊर्जा उत्पादन प्रक्रिया से है जिससे जलवायु पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता है जैसे- सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, जैव इथेनॉल से प्राप्त उर्जा इत्यादि इसके द्वारा कार्बन उत्सर्जन को नियंत्रित किया जा सकता है।

जल प्रदूषण से बचाव हेतु सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि हमें जल प्रदूषण को बढ़ावा देने वाली क्रियायो पर ही रोक लगा देनी चाहिए। इसके तहत किसी भी प्रकार के अपशिष्ट युक्त बाह्य स्त्राव को जल स्रोतों में मिलने नहीं दिया जाना चाहिए। घरों से निकलने

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 7.54| A Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 6, Issue 9, September 2023 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0609026 |

वाला कूड़ा या वाहित मल को एकत्रित कर शोधन संयंत्रों में पूर्ण उपचार के बाद ही जल स्रोतों में विसर्जित किया जाना चाहिए। पेयजल के स्रोत जैसे नदी, तालाब आदि के चारों ओर दीवार बनाकर भी बाहरी गंदगी के प्रवेश को काफी हद तक रोका जा सकता है। इसके लिए समाज के विभिन्न वर्गों को जल संसाधन प्रबंधन के विभिन्न विषयों के संबंध में जागरूक बनाने के लिए एक भागीदारी पद्धति को अपनाया जाना चाहिए।

दुनिया के आधे से अधिक भूजल प्राणियों को वर्तमान पर्यावरण परिवर्तन से पूरी तरह उभरने में 100 से अधिक वर्षों का समय लग सकता है जिससे भविष्य की पीढ़ी को पर्यावरणीय टाइम बम का सामना करना पड़ सकता है। भूजल स्तर में लगातार कमी होती जा रही है। हालांकि यह धीरे-धीरे बारिश के माध्यम से फिर से पुनर्भरण हो जाता है। लेकिन यह पुनर्भरण पर्याप्त नहीं है। इसके लिए हमें वाटर हार्वेस्टिंग की आवश्यकता है।

आकाशीय बिजली गिरने की घटनाओं में हर वर्ष बढ़ोतरी हो रही है। इस घटना के पीछे का मुख्य कारण ग्लोबल वार्मिंग है। इन घटनाओं से बचने के लिए जरूरी है कि लोगों को नुक्कड़ नाटकों, पत्र पत्रिकाओं, कहानियों, लोकगीतों के माध्यम समझाया जाए क्योंकि वज्रपात के समय जिन लोगों की मृत्यु होती है वे ज्यादातर किसान होते हैं।

IV.निष्कर्ष

पर्यावरण की समस्या से निपटने के लिए हमारा यह दायित्व बनता है कि हम वह आचरण किसी भी कीमत पर न करें, जिससे पर्यावरण का क्षरण या क्षति हो। इसके लिए हमें अपनी जीवनशैली में बदलाव लाना होगा। विलासी और भोगवादी अभिवृत्तियों पर अंकुश लगाना होगा। भौतिक संसाधनों का धड़ल्ले से प्रयोग रोक कर हम काफी हद तक पर्यावरण संतुलन में सहायक बन सकते हैं। विकास और प्रगति की हम उतनी ही दौड़ लगाएं, जितनी की इजाजत प्रकृति हमें दे। हमें प्रकृति की ओर लौटकर ही अपना बचाव करना होगा। कुछ छोटे-छोटे प्रयास कर हम पर्यावरण को बचा सकते हैं। पूरी दुनिया एक भयंकर संकट के मुहाने पर खड़ी है। यदि ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन को नियंत्रित करने के उपाय शीघ्र से शीघ्र नहीं अपनाए गए तो धरती से जीवन को समाप्त होते देर नहीं लगेगी। जीवाश्म ईंधनों के इस्तेमाल पर पूरी तरह रोक लगाना तो मुश्किल है, लेकिन जहाँ तक सम्भव हो उनका इस्तेमाल को सीमित किया जाना चाहिए, ताकि वैष्विक तापमान को बढ़ाने वाली ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को कम-से-कम किया जा सके।
पर्यावरण पर बड़े देशों की चुप्पी सही नहीं है पर्यावरण प्रदूषण के आसन्न संकट से दुनियां को बचाने की कवायद अब निराशा में बदलती जा रही है। इस संकट से दुनिया के अस्तित्व पर बहु-आयामी खतरा है और अगर ऊर्जा के स्वच्छ स्रोतों को नहीं अपनाया गया तो तीन हजार साल का तथाकथित विकास ही इस तबाही का कारण बनेगा। लेकिन जब तक बड़े देश आर्थिक मदद नहीं करते तब तक छोटे देश महंगे लेकिन स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों की ओर नहीं जा सकते। जी-20 के कुछ सदस्य देशों ने संपन्न देशों पर दो प्रतिशत सुपर रिच टैक्स लगा कर आर्थिक मदद की समस्या हल करने की मांग तो उठाई पर संपन्न देश उसे अनसुनी कर रहे हैं। पर्यावरणविद और पूर्व अमरीकी उप-राष्ट्रपति और नोबेल पुरस्कार विजेता अल गोर की वह आशंका सही साबित हो रही है, जिसमें उन्होंने कहा था कि आने वाली पीढ़ी के दो ही सवाल हो सकते हैं। वह पलटकर आज की पीढ़ी से पूछेगी कि जब पर्यावरण क्षति से बढ़ते तापमान से उत्तरी ध्रुव पिघल कर दुनिया में अस्तित्व के संकट का ऐलान कर रहा था तो तुम क्यों सोए थे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. संस्थान और पर्यावरण, डॉ. सुरेन्द्र अवस्थी म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
2. पर्यावरण प्रदूषण के दुष्प्रभाव, उमेश राठौर ।
3. पर्यावरण, भारत सरकार पर्यावरण एवं वन मंत्रालय (नईदिल्ली) वर्ष 15 अंक 1 दिसम्बर 2002
4. पर्याहष्टि, पर्यावरण नियोजन एवं समन्वय संगठन भोपाल नवम्बर 2006
5. पर्यावरण संरक्षण एवं कानून, डॉ. राजकुमार शर्मा कल्पना प्रकाषन दिल्लीं 2010
6. पर्यावरण एवं परिस्थिति की, जे.के. पुरवार।
7-दैनिक भास्कर अलवर 30-11-2022

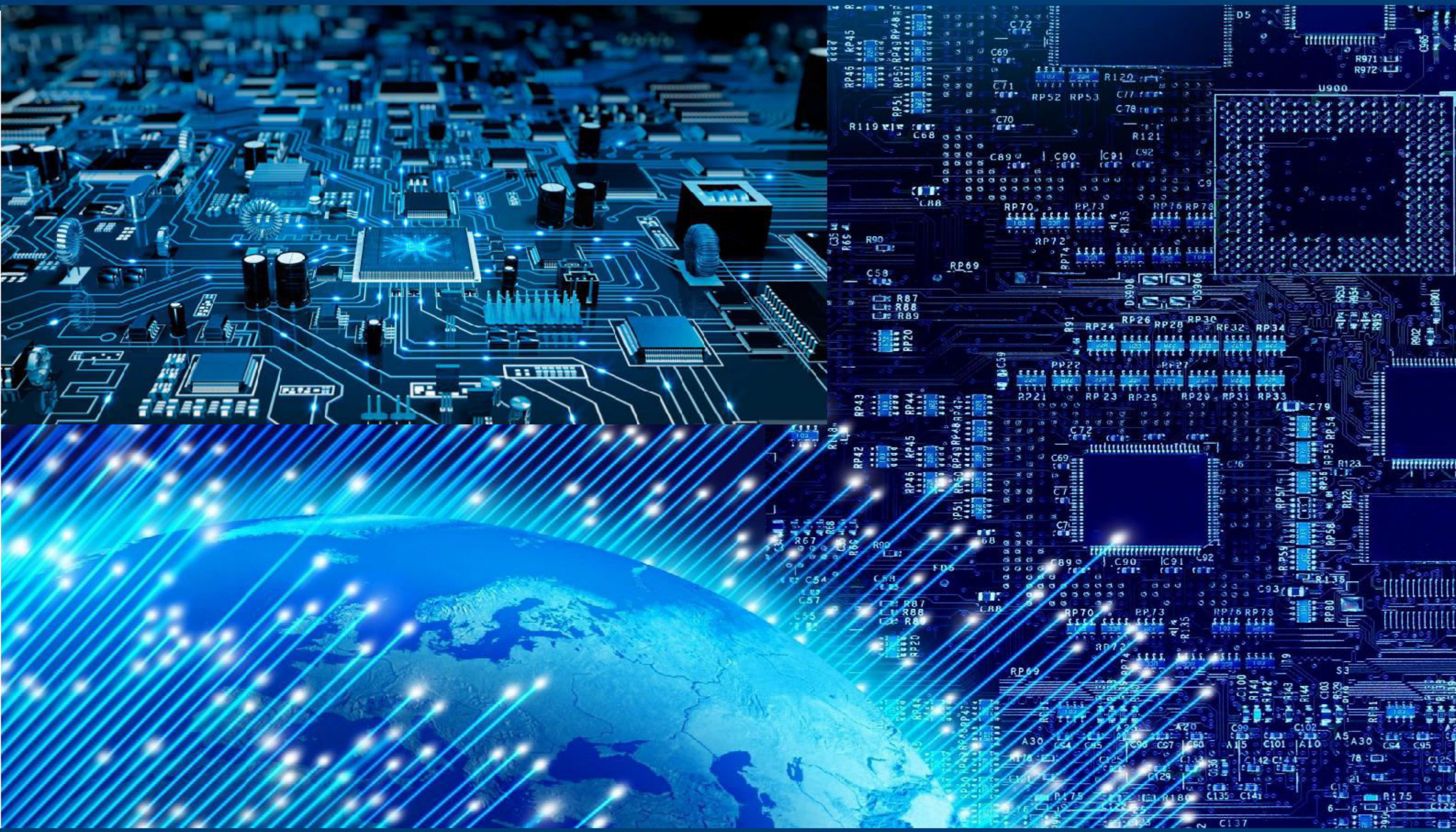

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor
7.54

ISSN
INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

निस्केयर
NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

| Mobile No: +91-6381907438 | Whatsapp: +91-6381907438 | ijmrset@gmail.com |

www.ijmrset.com